नटी – आर्य! एवमेतत्। अनन्तरकरणीयम् तावदार्य आज्ञापयतु।

संधि-विच्छेद – आर्य एवम् एतत् अनन्तरकरणीयम् तावत् आर्य आज्ञापयतु।

शब्दार्थ - आर्य = पति के लिए सम्बोधन। एवम् = ऐसा या इस प्रकार। एतत्= यह, तावत् = तब तक, अनन्तरकरणीयम् = अन्य (भिन्न) करने योग्य आर्यः = आर्य प्रथमा एकवचन, आज्ञापयतु = आज्ञा करें, आ+√ज्ञा लोट्लकार, प्रथम पुरुष एकवचन

नटी – आर्य! यह ऐसा ही है। अब जो करना है, उसे आर्य बतायें।

सूत्रधारः- किमन्यदस्याः परिषदः श्रुतिप्रसादनतः। तदिममेव तावदचिरप्रवृत्तमुपभोगक्षमं ग्रीष्मसमयमधिकृत्य गीयताम्। सम्प्रति हि –

संधि-विच्छेद – अस्याः परिषदः श्रुतिप्रसादनतः किम् अन्यत् । तत् इमम् एव तावत् अचिरप्रवृत्तम् उपभोगक्षमम् ग्रीष्मसमयम् अधिकृत्य गीयताम्। सम्प्रति हि-

शब्दार्थ - अस्याः = इसके (स्त्री०) षष्ठी, एकवचन, परिषदः = परिषद या सभा के (स्त्री०) षष्ठी, एकवचन, श्रुतिप्रसादनतः = कानों की प्रसन्नता से, श्रुति(√श्रु+क्तिन्) +प्रसादनतः(प्र+√सद्+णिच्+ल्युट्) तदुपरान्त पंचमी विभक्ति के अर्थ में तसिल् प्रत्यय का योग हुआ। अन्यत् = दूसरा, किम् = क्या। तत् = अतः, अचिरप्रवृत्तम्= शीघ्र ही प्रवृत्त हुए, (प्र+√वृत्+क्त), उपभोगक्षमम् = उपभोगों के लायक इमम् = इसको द्वितीया, एकवचन, ग्रीष्मसमयम् = ग्रीष्म ऋतु को अधिकृत्य = आधार बनाकर (अधि+√कृ+ल्यप्) एव = ही तावत् = तब तक गीयताम् = गया जाय

√गा+यत्, लोट्लकार, प्रथम पुरुष एकवचन । सम्प्रति = अभी या इस समय हि = क्योंकि -

सूत्रधार:- इस सभा के कानों को प्रसन्न करने के अतिरिक्त और क्या? अतः शीघ्र ही प्रारम्भ हुए (जलस्नानादि) उपभोगों के योग्य इस ग्रीष्म-काल के विषय में ही कोई गीत गाओ। इस समय (दिन के समय में) -

सुभगसलिलावगाहा: पाटलसंसर्गसुरभिवनवाता:।

प्रच्छायसुलभनिद्रा दिवसा: परिणामरमणीया:॥3॥

अन्वय- सुभगसलिलावगाहा: पाटलसंसर्गसुरभिवनवाता: प्रच्छायसुलभनिद्रा दिवसा: परिणामरमणीया:।

अर्थ – जल में स्नान करना सुखद प्रतीत होता है। पाटल के पुष्पों के सम्पर्क से वन की हवायें सुगन्धयुक्त होती हैं। (वृक्षों की) सघन छाया में नींद सरलता से आती है और दिन सायंकाल से समय मनोहर प्रतीत होते हैं।

शब्दों की व्याख्या – सुभगसलिलावगाहा: पाटलसंसर्गसुरभिवनवाता: प्रच्छायसुलभनिद्रा: परिणामरमणीया: - ये सभी शब्द दिवसा: के विशेषण हैं।

सुभगसलिलावगाहा: = सुभग: (सुखकर: प्रीतिप्रद: वा) सलिले (जले) अवगाह: (स्नानं निमज्जनं वा) इति सुभगसलिलावगाहा: अर्थात् जब जल में डुबकी लगाकर स्नान करना सुखद है ऐसे दिन

पाटलसंसर्गसुरभिवनवाता: = पाटलानां (पाटलनामधेयानां ग्रीष्मसमयारम्भे विकासशीलानां पुष्पाणां) संसर्गेन (सम्पर्कात्) सुरभय: (सुगन्धयुक्ता:) वनवाता: (वनवायव:)इति पाटलसंसर्गसुरभिवनवाता: अर्थात् पाटल पुष्प के सुरभि से सुगंधित वन की वायु वाले दिवस

प्रच्छायसुलभनिद्रा = प्रकृष्टा घना छाया यत्र तत्प्रच्छायं तेषु घनछायायुक्तस्थालेषु सुलभा सुखेन लभ्या प्राप्या वा निद्रा येषु इति प्रच्छायसुलभनिद्रा अर्थात् घने छायादार वृक्षों के नीचे सरलता से नींद आ जाये ऐसे दिवस

परिणामरमणीया: = परिणामे दिवसावसाने रमणीया: मनोहरा: तादृशा: दिवसा: इति परिणामरमणीया: अर्थात् दिवस की समाप्ति पर मनोहर लाग्ने वाले दिन

दिवसा: = दिन

अलंकार – विशेषण साभिप्राय हैं अतः परिकरालंकार है। ग्रीष्म का स्वाभाविक वर्णन होने से स्वाभावोक्ति अलंकार है। श्रुत्यनुप्रास और वृत्त्यनुप्रास दोनों हैं।

छन्द- आर्या